नं० ५५१३-च

सूर्यकामंत्र (स्तुति)

पत्राणि १२ (द्वादश)

~~नं. ९३२~~

नं० ५५१३-च
सूर्य का मन्त्र (हिन्द्याम)
पत्राणि १२ (द्वादश)
(स्तोत्रम्)

नं० १०३२-क
सूर्य का
स्तुति

ॐ श्री सूर्याय नमः ॥ दोहा ॥ ॐ प्रतिश्रव
रजमनकुसलवमैनादेषप्रणार ॥
किंजीतैहेः नइतेमनमद्दकरनवि
चार ॥ । ॥ चौपाई ॥ मैनादेषौमद्द वि
माला ॥ तिषभ्रांविममैरोअाला

सू: १

करतविचारतहांमिलदोऊ॥ बिजे-
हौईकीजेकृतसोऊ॥ १४ देवतास्तुथ-
घ्रतायाहि॥ करिप्रसनकारजसभ-
साथाहि॥ महातेजसेष्यबौपाला
सिमराहिहमताकोननकाला॥ १५

देवबिनुसिधिनहोई॥कोटिउपारक
रहंमनतोई॥मनवचकर्मउदमयह-
कीहो॥प्रथमसमजनकरिदीनो॥
दोहा॥मंजनकरितनन्हाविकोउ-
ठ्यानामसमरतनकोन॥रविसमन्नुषक

स
२
2

रोगिकैगाढ़हैवैमतदीन ॥ ३ ॥

चौपाई ॥ जाप्रमतनसरजकाकोतो

प्रथमैनमस्कारकरलीनो ॥ अस

तुतकरीअनेकप्रकारा ॥ नमहो

गावैजगाकाकरतारा ॥४॥ महाप्रता

पवातकसपसतु॥ हेकरनतेज
लीमहाउतु॥ हमरोहैप्रणामतुम
कोसब॥ सिद्धकरोकाजहमके
सब॥ तुमप्रतिपालकसकलज
गतको। मनवांछनफलदेतभग

सू॰ तिनको ॥ पृथिवी जोजन कोटि प्र

१ चासा ॥ जहां तहां तुम महा प्रकासा ५

3 दोहा ॥ सहस्र किरण तुम मेरै विषे

सदा प्रानदत भाई ॥ जो तुम कौं ध्या

करेहिं सम भै घर जाहिं जाइ ॥ ५ ॥

चौपाई ॥ तुम्ह हौ हो सम्भ ह षवीपाला
कृपा रूप बीरि तेजो बिसाला ॥ तुम्ह को
ज्ञान समरथ सकल बिधि ॥ कोउ प्र
णाम करो हमरी सिधि ॥ जैसे मन
सा करि कोई थिआवत ॥ सो तुम प

स्तुः ४

इद्वांछितफलपावत॥ब्रह्मादिसम
देषआराधत॥इंद्रादिकजपतप
करिसाधत॥किंनरगणगंधर्वदेव
न॥समसेवनतेफलदाइभाउधर॥
जोतमकरनजगजप्रकासा॥सक

लोभ घी ह्रै बिनास ॥ ६ ॥ दोहा ॥ श्रे
यकार होवै है नगर माहि कछु न त
कै नैन ॥ पृथवी का आधार तम करप
त्वम ह घ है न ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ सहस कै
नत मरे सुख माही ॥ तम सम धर्यो श्रव

श्र· ५

रकेऽकनाहो। नमरेनामश्चनंतश्रणा

ग॥ सिमरेह्लानासि पिजेकमा॥ श्रव

मैस्हरजनामन्नमाया॥ नाकेसद्दाश्र

णमह्नमाया॥ क्रतिश्चाहिननामन्न

मजना॥ देनमनाजिनवांछानेदान

जो नर सदा हि वाकर सेवहि ॥ प्रगट दान
नाहीं छिन लेवहि ॥ मेहनत करनिभ
मकरि ध्यावहि ॥ सब मित्र होहि जस
पावहि ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सिव ताको सिम-
रन कौ हृय पदराव कौ होई ॥ पविही

स्तु: कोंग्रायहीश्रोतिसुखपावहिसोई १
६ चौपाई॥ अवरतामकसपकुलते
रो। तिमहिविजेकोराजसमेरा॥
6 भान्तामनहमाराजसवंना॥जोन
रप्याःहोःउायेवंता॥फ़्तसह

हिमवतनामनगमारा ॥ सेवतमंगाल:
विविधिप्रकारा ॥ देतमणिनामउ
१४ जो सेवहि ॥ लहफलावहिकीरत
जसलेवहि ॥ पृथवीपालनामन
कथ्यावहि ॥ जीतहिभागइसभभजा

स्तु:

वंदि॥ नमो नाम अनंत अपारा॥ द्वार
मकै ह्य गाट संसारा॥ ८॥ दोहा॥ न
मो द्वादस नाम हृदय प्रेम तैं नर को-
ई॥ मन वांछत फल पावै सिद्धि म-
नोरथ होई॥ ९॥ चौपाई॥ ध्रुव अध्याम

मैनेकिकोई ४ नाकेग्रहसंतननव·
होई ॥ धनश्रीप्रीततनाहिनधनश्रावे
भजैभोगाहैतनमहरपुजावे ॥ जपथश्र
थेजोनकेध्यावे । विजैहोयतिसज
मवढावे ॥ जिहजेसोमनमाकरि·

सु: पायो॥ सोनमतेवंछतफलपायो
८ जोनमसमरथगातायेउनफके॥ दो
जैदानविजेरणमफके॥ नमस्का
रनमकेहमकोना॥ नमछतराजा
मोसमभावियेचीना॥ १२॥ दोहा॥ जोम

नमिकोनोकुमलवसुनिराविभक्ति
पाल॥दिनमणिसुरमवंतदुवैबालि
श्राईयोनतकाल॥१॥चौपाई॥भएप्र
सेनवचनभाषरवि।मागइसोवे·
रहेगेकुमलव॥हाथजोइवोलेदो

सू॰
५

ज्ञाता। यहहमरेड्डकाइक्कमला
ना। सेपतम्रघाण्पमोहमरोजे। श्रा
गुयरेड्डकपावरकोजे॥ एष्यमरे
ड्डवावेजेड्डःरति॥ कारड्डश्रासीम
हनमरदलगाते॥ समस्रघाएए

सराजमंगायो।कुमलवकोजिहय
रवैनायो॥वलदीयोसांगाहूपाक
य॥मानवानदीपेफुनमहावर॥४॥
दोहा॥ इथमनामसकिकेहादीय
हूपाकरहरा।वढ्इदीयोयायसमय

मृ
१०
10

मलवक्रुसकोप्रणामृ ॥५॥ चौपाई
प्रगतिवानजलवानदीयोपकीति ॥
तीनेघघरूदीयातीछनप्रीति ॥ मह
मलवानजवदीना ॥ मिलावानेदे
समउघछीनो ॥ ममलवानदीयाव

इरोरावै । श्रुतिप्रनापकोहिमकेन
नह्रोकावै ॥ पवनवानदोनोदिन
मणजव । भपप्रमनह्रोपक्रमल
वनव । मातवानदेसोश्राम्हतनके
करीत्रसेमांवजेह्रोरे रतमो ॥

सु॰ ॥

स्वर्गलोकफनिलोकपताला ॥
तुमसमसमसमास्तजेकोऊअनपाला ॥ १८
दोहा ॥ स्वजंग्रतरध्यानभयो ॥ गा
योसोनिजधाम ॥ रथ्यचाड़िलवकु
समसमचगाहिचलेकरनसंग्राम ॥

इतिश्रीभाष्यपराणेश्वमेधपव
णि ॥ मेरुतनुध्याऊछतीसमोक
वटहकतजोअज्ञान ॥ १ ॥ इतिश्री
सूर्यकामंत्रलवकुसमंसपूर्णम् ॥

१४२

